अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

कर्म बन्धन से बचने का एक मार्ग है अनासक्ति: आचार्यश्री महाश्रमण

-कर्म की दुनिया में कर्म बन्ध से बचने के लिए आचार्यश्री ने प्रदान की प्रेरणा

-ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने आचार्यश्री के समक्ष दी अपनी प्रस्तुति

-मर्यादा महोत्सव के बाद तेरापंथ भवन में विराजमान हैं तेरापंथ अनुशास्ता

-लोगों को नित्य प्रवचन श्रवण और मंगल दर्शन का मिल रहा लाभ

13.02.2019 ए.के.एस. नगर, कोयम्बत्तूर (तमिलनाडु): कोयम्बत्तूर की धरती पर ऐतिहासिक मर्यादा महोत्सव सुसम्पन्न कर जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अनुशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी वर्तमान में कोयम्बत्तूर के तेरापंथ भवन में विराजमान हैं। कोयम्बत्तूरवासियों को नित्य प्रति आचार्यश्री के दर्शन, मंगल प्रवचन श्रवण और निकट उपासना का अवसर प्राप्त हो रहा है। अपने आराध्य को अपने नगर पाकर निहाल कोयम्बत्तूरवासी मानों फूले नहीं समा रहे हैं। प्रतिदिन प्रातः से जो श्रद्धालुओं के उमड़ने का क्रम आरम्भ हो जाता है, वह देर रात तक चलता रहता है।

शुक्रवार को आचार्यश्री ने गांधीपार्क में आयोजित मंगल प्रवचन कार्यक्रम में उपस्थित श्रद्धालुओं को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि आदमी परम की साधना करना चाहता है और मोक्ष प्राप्त करना चाहता है तो उसे कर्मों के बन्धन से भी बचने का प्रयास करना चाहिए। मानव जीवन में जहां कर्म और प्रवृत्ति होती है, बंधन भी संभव है। आदमी शरीरधारी है और साधना के लिए शरीर की अपेक्षा होती है। धर्म-साधना का साधन शरीर बनता है, इसलिए शरीर को टिकाना भी आवश्यक होता है। शरीर को टिकाने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है, भोजन की आवश्यकता है तो फिर उत्सर्ग की भी आवश्यकता होती है। भोजन की आवश्यकता है तो आदमी को उसके लिए अर्थार्जन भी करना होता है। इस प्रकार आदमी को अनेक कार्यों के लिए कर्म करना आवश्यक हो जाता है और प्रवृत्ति भी करता है तो कर्मों का बंधन भी होता है। प्रवृत्ति करना आवश्यक है और कर्मों के बन्धन से भी बचना है तो उसके लिए एक मार्ग अनासक्ति का है। अनासक्ति ही एक ऐसा मार्ग है, जिसके द्वारा प्रवृत्ति के बाद भी कर्मों के बन्धन से बच सकता है।

आदमी कोई भी कार्य अथवा प्रवृत्ति करे, लेकिन उसमें आसक्ति न रखे। उस प्रवृत्ति के प्रति अनासक्त रहने का प्रयास करे तो कर्मों का मामूली बन्धन अथवा नहीं भी हो सकता है। जैसे कोई आदमी भोजन करता है तो वह उसे आसक्ति से ग्रहण करता है। मनोज्ञ पदार्थ मिल जाए तो उसे आसक्ति के साथ ग्रहण करता है। जब आदमी किसी प्रवृत्ति में आसक्त हो जाता है तो वह बंध का कारण बनता है। एक आदमी सहजतया जो भी प्राप्त हो गया, उसे ग्रहण कर लेता है, उसमें आसक्ति नहीं रखता तो बंधन से बच सकता है। इस प्रकार आदमी को भोजन, कपड़ा, मकान, धन, संपत्ति के प्रति भी अनासक्ति की भावना हो तो आदमी कर्मों के बन्धन से बच सकता है।

आचार्यश्री के मंगल प्रवचन के पश्चात मुनि ज्ञानेन्द्रकुमारजी, मुनि विमलेशकुमारजी तथा समण सिद्धप्रज्ञजी ने अपनी आस्थासिक्त भावाभिव्यक्ति दी। आचार्यश्री ने समणजी वर्ष 2021 में मालवा में मुनि दीक्षा देने की घोषणा की। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं द्वारा आचार्यश्री के समक्ष आयोजित कार्यक्रम में सर्वप्रथम प्रशिक्षिका श्रीमती वन्दना पारख ने भावाभिव्यक्ति दी। प्रशिक्षकाओं द्वारा सामूहिक कविता पाठ 'कृतज्ञता के स्वर' का वाचन तथा बाद में गीत का संगान कर आचार्यश्री के प्रति अपनी प्रणति अर्पित की गई।